

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

140



महर्षि-पतञ्जलिमुनिप्रणीतम्

पातञ्जलयोगदर्शनम्

‘व्यासभाष्य’-संवलितम्

तच्च

‘योगसिद्धि’-हिन्दीव्याख्योपेतम्

व्याख्याकारः

प्रो० सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य

एम० ए० डी० फिल०

पूर्व कुलपति

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

THE
CHAUKHAMBA SURBHARATI GRANTHAMALA

140



PĀTAÑJALA- YOGADARŚANA

OF
MAHARṢI PATAÑJALI

Along with
VYĀSABHĀṢYA

Edited with
'Yogasiddhi' Hindi Commentary

By
Prof. Suresh Chandra Shrivastava

Formerly Vice Chancellor
Allahabad University, Allahabad



CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN
VARANASI

विषयानुक्रमणी

भूमिका

(१-४३)

प्रथम समाधिपाद (कुल ५१ सूत्र)

सूत्रक्रम	विषय	पृष्ठाङ्क
१	योगशास्त्र का आरम्भ	१
२-३	योग का लक्षण एवं फल	९
४-११	चित्तवृत्तियाँ	२१
१२	योग के उपाय	५०
१३-१४	अभ्यास	५३
१५-१६	वैराग्य	५६
१७	सम्प्रज्ञात समाधि	६२
१८-२०	असम्प्रज्ञात समाधि	६६
२१-२२	समाधिसिद्धि की आसन्नता	७५
२३	ईश्वर-प्रणिधान	७८
२४-२९	ईश्वर-निरूपण	८०
३०-३२	योग के अन्तराय	९९
३३-४०	चित्त के परिकर्म	११०
४१-४६	चतुर्विधसमापत्तिवर्णन	१२४
४७	निर्विचारासमापत्ति का उत्कर्ष	१४५
४८-४९	ऋतम्भराप्रज्ञा	१४७
५०	ऋतम्भराप्रज्ञाजन्यसंस्कार	१५१
५१	निरोधसमाधि	१५३

द्वितीय साधनपाद (कुल ५५ सूत्र)

सूत्रक्रम	विषय	पृष्ठाङ्क
१-२	क्रियायोग	१५६
३-४	पञ्चक्लेशवर्णन	१६१
५	अविद्यालक्षण	१६८
६	अस्मितालक्षण	१७४

७	रागलक्षण	१७६
८	द्वेषलक्षण	१७७
९	अभिनिवेशलक्षण	१७७
१०-११	क्लेशनिवारणस्वरूप	१८०
१२	कर्माशयभेद	१८३
१३-१४	कर्मफलसिद्धान्त	१८६
१५	दुःखवाद का विवेचन	१९९
१६	हेयनिरूपण	२११
१७	हेयहेतुनिरूपण	२१२
१८-१९	दृश्यस्वरूपनिरूपण	२१७
२०-२१	द्रष्टृस्वरूपनिरूपण	२३१
२२	दृश्य की नित्यता का वर्णन	२३७
२३-२४	प्रकृतिपुरुषसंयोग का वर्णन	२४०
२५	हान का स्वरूप	२५१
२६-२८	हानोपाय	२५३
२९-३४	योग के आठों अङ्गों का वर्णन	२६५
३५-३९	यमों की सिद्धियाँ	२८४
४०-४५	नियमों की सिद्धियाँ	२८९
४६-४८	आसन और उसकी सिद्धि	२९६
४९-५३	प्राणायाम और उसकी सिद्धि	३०१
५४-५५	प्रत्याहार और उसकी सिद्धि	३१४

तृतीय विभूतिपाद (कुल ५५ सूत्र)

सूत्रक्रम	विषय	पृष्ठाङ्क
१-४	धारणाध्यानसमाधिवर्णन	३२०
५-८	संयम का अन्तरङ्गत्व	३२५
९-१२	त्रिविध चित्तपरिणाम	३३१
१३	धर्मलक्षणावस्थापरिणाम	३३९
१४	धर्मी का स्वरूप	३५७
१५	परिणामक्रम	३६४
१६-४२	संयम की सिद्धियाँ	३७०
४३	महाविदेहा वृत्ति	४४८

४४-४६	भूतजय और उसकी सिद्धियाँ	४५०
४७-४८	इन्द्रियजय और उमकी सिद्धियाँ	४६१
४९-५०	सत्त्वपुरुषान्यथाख्याति और सिद्धियाँ	४६७
५१	देवताओं का निमन्त्रण	४७२
५२-५४	विवेकज्ञाननिरूपण	४७७
५५	कैवल्यनिर्वचन	४८८

चतुर्थ कैवल्यपाद (कुल ३४ सूत्र)

सूत्रक्रम	विषय	पृष्ठाङ्क
१	पञ्चविधसिद्धियाँ	४९१
२-३	जात्यन्तरपरिणाम	४९३
४-६	निर्माणचित्त	४९९
७	चतुर्विध कर्म	५०५
८-१२	वासना	५०९
१३-१७	बाह्य पदार्थों की सत्ता	५३१
१८-२४	पुरुष में चित्तद्रष्टृत्व	५४८
२५-२८	जीवन्मुक्त की मनोवृत्ति	५७५
२९-३१	धर्ममेघसमाधि	५८२
३२-३३	परिणामक्रमसमाप्ति	५८८
३४	कैवल्यस्वरूपव्यवस्था	५९७